[ISSN : 2348-2605]

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

www.gejournal.net

E-mail: hindires@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान
शोध पत्रिका
(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

21वीं सदी की हिन्दी कहानियों में धर्म का व्यावसायीकरण

डा. बोहती देवी

अस्सिटेन्ट प्रोफेसर - हिन्दी

सन्त मोहन सिंह खालसा लबाना गर्ल्स कॉलेज, बराड़ा

भारत सदियों से धर्म-प्रधान देश रहा है। पत्थरों में भी भगवान को तलाशने वाले भारतीय समाज तथा संस्कृति में आस्था भारतीय जनमानस की एक ताकत रही है । भारत में तमाम विदेशी ताकतों के दमन, अत्याचार तथा गुलामी के बावजूद भारतीय धार्मिक मान्यताएं व विशस अक्षुण्ण बने रहे हैं। परन्तु आज 21वीं सदी में आर्थिक संपन्नता तथा वैश्वीकरण की आंधी ने आस्था, विश्वास तथा धामिक भावनाओं को इतनी क्षति पहुँचाई है। जितनी कि सैकड़ों विदेशी आक्रमणकारी भी नहीं पहुंचा सके। आज हमारे समाज में धर्म के नाम पर अनेक पोंगा-पंडित अपनी-अपनी मान्यताओं के साथ अपने-अपने पंथ और मत बनाये हुए है। इन संतों की वास्तविकता यह है कि इनके भक्त तो दाने-दाने को मोहताज है और ये स्वयं दूध-मलाई में डूबे विलासितापूर्ण जीवन जी रहे हैं। भारत जैसे ऋषि मुनियों के देश में जहां संत-महात्मा पर्ण-कुटियों तथा कंदराओं में लोक कल्याण की साधना में लीन रहते थे । आज हमारे समाज में उपस्थित ये तथा कथित संत महात्मा आलीशान गड़ियों में सुरक्षा कर्मियों के रक्षा कवच में घूमते हैं। वातानुकूलित भव्य भवनों में निवास करने वाले इन संत महात्माओं के जीवन से सत्य, सादगी, सद्‌गुण, ब्रह्मचर्य तथा अनुशासन कोसों दूर है। इन सन्यासियों के जीवन में गृहस्थाश्रम के सभी सुख मौजूद है।

वस्तुतः आज के योगवादी वातावरण में धर्म एक बड़े व्यवसाय के रूप में उभर कर सामने आया है। पिछले कुछ समय में घटी अनेक घटनायें इस ओर संकेत करती हैं कि धामिक आश्रमों, मठों व केन्द्रों से गैर-कानूनी तथा अपराधिक गतिविधियों तक का संचालन हो रहा है। अनेक धर्म गुरूओं के व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन की विसंगतियों के जो दृश्य हमारे सामने आये हैं। ये हमें लज्जित व शर्मसार करते हैं। 21वीं सदी की हिन्दी कहानी धर्म के व्यवसायीकरण की समस्या को गहराई से समझते हुए उसके विटूप को सामने लाती हैं । मुक्ता की कहानी 'मण्डलावाली' धर्म के बदलते स्वरूप और धर्म के व्यावसायिकरण तथा अपराधीकरण को एक साथ उजागर करती है आज धर्म का अर्थ इंसानी जीवन मूल्यो तथा आदर्शों की स्थापना न होकर अपनी सत्ता तथा व्यवसाय बनाने की होड़ है। हमारे समय के साधु सन्यासी त्याग और सदाचार मं नहीं अपितु भोग -विलास तथा व्यभिचार में संलग्न हैं। पिछले कुछ समय में प्रकाश में आये मामलों से यह स्पष्ट हो जाता है कि धर्म का व्यावसायीकरण तथा अपराधी हो चुका है। कहानी में पुरानी पीढ़ी

की मण्डलावली को जब उसकी बहू चक्रधारी बापू के प्रवचन सुनने के लिए कहती है तो उसका जवाब हमारे समय में धर्म में आई विसंगतियों को दर्शाता है। भागवत कथा, रामकथा तो सुनी थी बहू ये चक्रधारी बापू की कथा क्या होवे है। हमारे जमाने में रामायणी लोगों का नाम भी कोई न जाने था.....इतना ताम-झाम इतना दिखावा हमारे जमाने में न था। दुर्गा पूजा के नाम पर डाकुओं की तरह उगाही होवे है । आजकल जितनी शोभायात्राएं जितने जुलूस बढ़े, उतनी मार-काट, खून खराबा बढ़ें। हमारे जमाने में ऐसा न था।''

आज साधु सन्यासी विलासपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इन तथाकथित योगियों का जीवन सभो सुख-सुविधाओं से संपन्न है। धार्मिक आश्रयों और मंदिरों की कमाई एक बड़े उद्योग से कम नहीं है। लोगों की आस्थाओं और अंधविश्वास का लाभ उठाकर संत महात्मा लाखों-करोड़ों रूपये के मालिक बन बैठे हैं। पिछले कुछ समय में मीडिया द्वारा ऐसे अनेक धर्म गुरूओं के खजानों का भंडाफोड़ किया गया है। जो करोड़ों रू. के मालिक बन बैठे हैं। और स्वयं को वैरागी कहतेहैं। वरिष्ठ कथाएं रूपसिंह राठौर जीवन चील झपट्टा शीर्षक कहानी में आज के साधु-सन्यासियों की जीवन शैली पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाते हुए लिखते हैं - ''एक महंत दस कमांडो के संगीनो के साये में' टहल रहे हैं। उसे बड़ा विचित्र लगा। इन साधु संतो को किसका भय है ? यह तो सृष्टि संचालक को अपनी मुट्ठी में दबाये बैठे हैं। इन्हे कैसा डर? फिर यह तो संत हैं। इस नारकीय धराधाम से क्या लेना ? इन्हें बैकुंठ वासी होने का भय ही कैसा ? ये वैरागी हैं। इन्हें जीवन का क्या लालच । ये तो हर प्रलोभन से दूर होने चाहिए । जब महंतजी द्वारा किसी भद्र सी लगती महिला से टा-टा कहते सुना तो माजरा समझ में आया । हां, तो ये योगी नहीं भोगी है तभी तो पैसे लेकर ज्योति दर्शन करवाते हैं। देव दर्शन की बोली लगवाते हैं। जो सबसे जयादा पैसे देगा वही पहले दर्शन पायेगा । कम देने वाला बाद में ।''

धार्मिक स्थलों पर चढ़ावे के रूप में अथाह धन सम्पत्ति आती है। इस धन संम्पत्ति का मालिक या तो कोई धार्मिक संगठन होता है या फिर वंशानुगत उस मन्दिर का पुजारी और पुरोहित । धार्मिक स्थलों पर जाकर लोग दया, ममत का संकल्प लेते हैं। ताकि सभी प्राणियों में सद्भावना बनी रहे और जगत का कल्याण हो।

धार्मिक संत महात्माओं के वैराग्य और लय में लोगों का विश्वास होता है। उन्हें भगवान क प्रतिनिधि मानकर लोग उन्हें श्रद्धा और विश्वास की दृष्टि से देखते हैं और श्रद्धानुसार दान धार्मिक स्थलों के प्रबन्ध के लिए देते हैं। परन्तु आज धार्मिक केन्द्र व्यावसाय के केन्द्र न गए हैं। धनी भक्तों के लिए विशेष पूजा अर्चना का प्रबन्ध धार्मिक स्थलों पर होता है। हिन्दी कहानी आवश्यक हस्तक्षेप करते हुए इस कहानी आवश्यक हस्तक्षेप करते हुए इस विसंगति को प्रकाश में लाती है।

पंखुरी सिन्हा की कहानी ''अकेला पर्यटन और अकेली पूजा' का निम्नांकित दृश्य इस तथ्य स्पष्ट करता है। पण्डित समूह का एक पीतवर्णी सदस्य बाहर निकल कर भीड़ से अंग्रेजी में पूछने लगा - ''किसी को अर्चष्ना करवानी है क्या ?'

''मेरे प्रश्न-सूचक दृष्टि के उत्तर में मुझे बताया गया कि मन्दिर की सामूहिक आर्चना - आरती हो चुकी है। किन्तु यदि कोई अपने नाम से विशेष अर्चना करवाना चाहे तो पैसे देकर उसका प्रबन्ध किया जा सकता है।''

इसी प्रसंग को जया जादवानी की कहानी ''मैं एक पत्ता हूँ शाख से टूटा हुआ'' में भी देखा जा सकता हे। जया जादवानी मन्दिरों में पूजा अर्चना के समय आरती के लिए लग बोलियों का दृश्य उभारती है। इस कहानी का नायक सारे पाखंड को देख रहा है जो अपने मित्र नरेन्द्र के साथ तीर्थ पर आया है। कथानायक के शब्दों में - नरेन्द्र भाई के बगल वाले कमरे से पूजा सामग्री की छोटी सी थाली ले ली, जिसमें धूप चन्दन था। उन्होंने चंदन वंदन किया। पूजा अर्चना की तैयारी चल रही थी। तैयारी पूर्ण होने के बाद प्रथम आरती के अधकिारी व्यक्ति की बोली लगने लगी जिसकी अन्तिम बोली मान्य होगी, वह उस दिन की भगवान की आरती का प्रथम अधिकारी होगा। ऐसे ही जल से स्नान की, दूध से स्नान की चन्दन चढ़ाने की बोली हजारों में लगती रही। नरेन्द्र ने ऊँची बोली लगाकर प्रथम स्थान पा लिया ।''

जय यादवानी मैं अपनी मिट्टी मे खड़ी हूद्द काँधे पे अपना हल लिए -

''रूपये को गति वर्तुलाकार है। वह इन्ही मन्दिरों, मठो, पंडितो, श्रद्धालुओं राजनेताओं के ईद-गिर्द गोल घूम रहा है। वह आम आदमी के पास जाए तो कैसे ?

रमेश उपाध्याय की कहानी सत्यवक्ता' एक आम आदमी भगवान बनने की कथा को किस्सागोई में व्यक्त करती है। कि कैसे एक सामान्य व्यक्ति धर्म के आधार पर धर्म प्रवचन करते हुए राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय स्तर का महानसत्य वक्ता तथा भगवान सत्यवक्ता बन जाता है।

कहानी बड़ी बेबाकी से धार्मिक महात्माओं की ऐशपरस्ती तथा उनके ऊँचें रसूख को सामने लाती है। कहानी का नायक चौराहे पर लोगों को सत्यवचन सुनाकर अपनी अजीवका चलाता है। परन्तु शहर में अन्य सत्यवक्ताओं को यह नहीं सुहाता कि कोई इस प्रकार चौराहे पर सत्य वचन करे और उनकी प्रतिष्ठा को मिट्टी में मिलाए। शहर के एक सत्य वक्ता का प्रतिनिधि उसे भी दूकान खोलकर सत्यवचन करने को सलाह देता है। कथानायक के मन में उथल-पूथल है। वह इस तरह दूकान खोलकर सत्यवचन नहीं करना चाहता परन्तु अन्य सत्यवक्ताओं द्वारा सुनियोजित तरीके से नकेगल उसकी दुकान खुलवा दी जाती है। अपितु वह समझदार सत्यवक्ता बन चुका है। रमेश उपाध्याय आधुनिक सत्यवक्ता और कथानायक सत्यवक्ता के बीच संवाद के माध्यम इस से स्पष्ट करते हैं :-

''शहर में दूसरे सत्यवक्ता भी तो है। उनकी कमाई दिन-दूनी बढ़ रही है ओर तुम्हारी घट रही है। तुम भी क्यों नहीं उनकी तरह दुकान खोलकर बैठते ?''

''मेरे पास इतना पैसा नहीं कि बाजार में दुकान लेकर बैठूं । मैं तो अपने टूटे-फूटे मकान की मुरम्मत ही मुश्किल से करा पाता हूँ।''

''हम सारे सत्यवक्ता मिलकर तुम्हे दुकान दिलवा देगें। यहां तुम इतनी बड़ी भीड़ को इतने सारे सत्य वचन सुनाकर भी इतना कम कमा पाते हो। वहां तुम एक रूपये में एक आदमी को एक सत्य सुनाओंगे और दिन भर सैकड़ों रू. कमा लोगे।

''एक दिन में सैकड़ों रूपये'' ?

''और नहीं तो क्या । जानते नहीं सत्य कितना दुर्लभ हो गया ''

''नहीं, सत्य तो शहर में हर जगह मिलता है जहाँ देखो -''

''लेकिन यह तो सोचों उसके लिए तुम्हे शहर में भटकना पड़ता है। सत्य को सुनाने लायक भी बनना पड़ता है। सुनाना भी पड़ता है। क्या इस सबका मेहनताना बस यही है - दो-चार पैसे और चार छह रोटियाँ ? मेरी मानो कल मेरे पास चले आओ और हम सब की मदद सेदुकान लेकर ठाट से बाजार में बैठो। मेरी बात समझ ना आये तो घर जाकर अपने परिवार के लोगों से पूछ लेना। मुझे पक्का विश्वास है कि वे तुम्हे यही सलाह देगें।'' और यही होता है परिवार के लोगों का मत है कि जब इतने लोग धर्म के नाम पर दुकान खोलकर बैठे हैं और सुनाने वाला मामूली सत्य वक्ता राष्ट्रीय :- अन्तरराष्ट्रीय स्तर का भगवान सत्यवक्ता बन जाता है। पूँजीपतियों और राजनेताओं स उसके संबन्ध है।

चौराहे पर आने वाले लोगों में इस बात को लेकर काफी पछतावा है कि उनकी अनदेखी के कारण ही सत्यवक्ता उनसे दूर हो गया। रमेश उपाध्याय भगवान सत्यक्ता के फुलते फूलते व्यापार को निम्न शब्दों में व्यक्त करते हैं :- उधर शहर के धनी मानी लोग उससे खूब खुश थे। वे उसे अपनी महफिलों में बुलाने लगे । देखते-देखते शहर में उसकी धूम मच गई। अखबारों में उसकी खबरे छपने लगी। टेलिविजन के देशी-विदेशी चैनलों पर उसके साक्षात्कार होने लगे। उसके सत्यों के संकलन देश की अनेक भाषाओं में अनुदित होकर बिकने लगे। वह सबसे अधिक कमाने वाला सत्यवक्ता बन गया।

इस प्रकार रमेश उपाध्याय एक मामूली आदमी द्वारा धर्म के नाम पर शुरू की गई दुकान का एक बड़े व्यवसाय में बन चुका है। भगवान सत्यवक्ता अब साधारण सत्यवक्ता नहीं रह गया है। उसके पास वक्त नहीं है। सत्यवक्ता के भक्त उससे चौराहे पर आकर सत्यवचन का आग्रह करते हैं और उनका सचिव निश्चित तिथि व समय दे देता है। जब भगवान चौराहे पर सत्य सुनाने आयेगे।

परन्तु सत्यवक्ता विदेश से नही आ पाते क्योंकि अंर्तरराष्ट्रीय अपराधियों के गिरोह ने करायी है। अनुमान है कि सत्यवक्ता का इस गिरोह से गहरा सम्बन्ध था।

आधुनिक युग में धर्म के नाम पर मन्दिर बनवाने, मस्जिद बनवाने आदि हेतु चन्दा एकत्रित किया जाता है: परन्तु भ्रष्ट आचरण की प्रवृति के लोग इस चन्दे को हड़प जाते हैं।

वेद प्रकाश अमिताभ की 'असलाह' कहानी में लोगों के भ्रष्टआचरण को दिखाया गया है।''वे तब भी बोलना चाहते थे, आटा और आलू खरीदने की जिम्मेदारी चुन्ना को सौंपी जा रही थी। उन्हें मालूम था कि पिछले साल देवी जागरण का जो चन्दा हुआ था उसका बड़ा हिस्सा चुन्ना एण्ड कम्पनी ने हजम कर लिया था। आजकल विभिन्न तीर्थ स्थानों पर पंडे पुजारियों का जमघट लगा रहता है।

धर्म के व्यावसायीकरण का मुद्रा शवी सदी की हिन्दी कहानियों के मुख्य सराकारों में शामिल है। इन कहानियों में धर्म की आड़ में हो रहे धन और संपत्ति संचय को उजागर किया गया है। तथा कथित साधु सन्यासी जो तपस्वी होने का स्वांग करते हैं अपित बड़ी संपत्ति के मालिक और बड़े लोगों के संबंधी बन जाते हैं। लोगों की धार्मिक भावनाओं को उकसाकर धार्मिक अयोजनों के नाम पर भारी मात्रा में चन्दा व धन वसूलने वाले इन साधु महात्माओं की संपत्ति का खुलासा समय - समय पर होता रहा है। तीर्थ, अर्थ शास्त्र और ईश्वर (पंखुरी सिन्हा) क्रुफ्र (पंकज सुबीर) आदि कहानियों में भी धर्म के व्यावसायीकरण पर प्रश्नचिन्ह लगाए गए हैं।

.....

सन्दर्भ

मुक्ता : सीढ़ियों का बाजार, पृ. 61

रूप सिंह राठौड़, कोई है पृ. 73

पंखुरी सिन्हा, कोई भी दिन, पृ. 109

जया जादवनी - मै अपनी मिट्टी में खड़ी हूँ, कान्धे पें हल लिए - 87

रमेश उपाध्याय, डाक्युड्रामा तथा अन्य कहानियाँ पृ. 44